वर्ष :: 33 अंक : 30
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

मिथिला वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता
झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

/mithilavarnan

बोकारो :: रविवार, 23 अप्रैल, 2023 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका
अवश्य पढ़ें-

निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मैनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

सेल के भावी अध्यक्ष अमरेंदु प्रकाश ने 'मिथिला वर्णन' से खास बातचीत में कहा-

टॉप-5 शहरों में जल्द होगा बोकारो

12.5 मिलियन टन होगी बोकारो स्टील प्लांट की क्षमता

50 वर्षों में सर्वाधिक उपलब्धियों भरा रहा पिछला एक साल

- विजय कुमार झा -

बोकारो : 'निकट भविष्य में बोकारो देश के टॉप-5 शहरों में शुमार होगा। इस दिशा में तेजी के साथ हम आगे बढ़ भी रहे हैं। पिछले एक साल की अवधि में शहर और प्लांट के विकास में जिस गति से काम हुए हैं, उससे यह उम्मीद बलवती हो चुकी है।' यह कहना है बोकारो स्टील प्लांट के निदेशक प्रभारी एवं स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) के भावी अध्यक्ष अमरेन्दु प्रकाश का। 'मिथिला वर्णन' से एक खास बातचीत में उन्होंने कहा - 'जब बोकारो देश के टॉप-5 शहरों में आ जाये, तभी हम बोकारो को विकसित मानेंगे। जब हमने पिछले वर्ष यह बात कही थी, तो लोग शायद हम पर हंसे होंगे कि, अच्छा! बड़ी-बड़ी बात कर रहे हैं, जो जी में आ रहा है, बोल दे रहे हैं। लेकिन, मेरा मानना है कि पिछले एक साल में लोगों को यह लगने लगा है कि शायद हम उस दिशा में बढ़ रहे हैं। यह बोलने की नहीं, करने की बात है। हम उम्मीद करते हैं, समय लगेगा, लेकिन यह देश के टॉप-5 शहरों में गिना जाएगा। अपनी स्थापना के 50 साल के दौरान पिछले वित्तीय वर्ष 2022-23 में बोकारो स्टील प्लांट ने सभी क्षेत्रों में अच्छा काम किया है। साथ ही, आने वाले दिनों में बोकारो का भविष्य बहुत ही अच्छा होने वाला है।'

सेल अध्यक्ष के रूप में बोकारो के भविष्य को लेकर पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा- बोकारो स्टील प्लांट ने अभी बहुत अच्छा किया, लेकिन अभी भी 10 प्रतिशत करना बाकी है। बिना कुछ पैसे लगाये या और कुछ किये यही प्लांट 10 प्रतिशत और अच्छा कर सकता है। हमारा मानना है कि यह 10 प्रतिशत और आगे बढ़ेगा और वह यह इसी साल होगा। हमारी टीम ने यह चैलेंज लिया है कि इसे इसी साल पूरा करना है।

उन्होंने कहा- आगे जाने के लिए बोकारो में जो योजना है, वह बोकारो स्टील प्लांट की उत्पादन क्षमता में विस्तार करने की है। बोकारो स्टील अभी 5 मिलियन टन का प्लांट है। इसमें तुरंत इसी महीने के अंतर्गत ढ़ाई मिलियन टन के विस्तारीकरण की योजना सेल बोर्ड से स्वीकृत हो जाएगी। जो बना हुआ प्लांट है, इसी के अन्दर थोड़ा-थोड़ा मॉडिफिकेशन करना है और इसी प्लांट में ढ़ाई मिलियन टन का विस्तार हो जाएगा। अर्थात बोकारो 7.5 मिलियन टन का प्लांट हो जाएगा। यह काम 2027 तक पूरा हो जाएगा और वर्ष 2028 तक उत्पादन शुरू हो जाना चाहिए। इसके बाद हमें बोकारो को 5 मिलियन टन और बढ़ाना है।

अगर दो साल हम छोड़ दें, तो 2030 से इस पर फिर काम शुरू होना चाहिए। उसके बाद वर्ष 2034 तक बोकारो स्टील प्लांट की उत्पादन क्षमता 12.5 मिलियन टन की हो जाएगी। मसलन, बोकारो अभी जहां है, वहां से ढ़ाई गुना आगे चला जाएगा। इसके पास जगह की कोई कमी नहीं है।

5-10 साल में बहुत आगे जाएगा बोकारो

निदेशक प्रभारी ने कहा- मेरा मानना है कि बोकारो का भविष्य बहुत अच्छा है। सुनहरा है। बोकारो में उन्नति करने की बहुत क्षमता है। मैं यह मानता हूं कि इतने सालों में शायद हमने जितनी क्षमता थी, उस अनुरूप रिजल्ट नहीं दिया। लोग जितने टैलेंटेड (प्रतिभावान) लोग हमारे यहां हैं, हम देश देखकर आए हैं, सब जगह रहे हैं, गए हैं, इतने टैलेंटेड लोग कहीं और नहीं हैं। प्राइवेट सेक्टर में भी नहीं है। हम कम तनख्वाह देते हैं, फिर भी हमारे यहां ज्यादा से ज्यादा टैलेंटेड लोग हैं, यह हम गर्व से कह सकते हैं. लोगों में समर्पण है। इस समर्पण को सकारात्मक परिणाम में बदलना है। हममें बहुत समर्पण हो और परिणाम नहीं निकल पाया तो कोई मतलब नहीं है समर्पण का। यही फैसिलिटेट करने की जरूरत है। यही उपलब्धता सुनिश्चित करनी है। हम यह कह सकते हैं कि आप बोकारो को देखकर बहुत खुश होंगे। अगले 5 साल में, अगले 10 साल में खुशी होगी आपको बोकारो को देखकर कि बोकारो बहुत आगे जा रहा है।

शहर में बदलाव से प्रेरित हुए सहकर्मी

उन्होंने कहा कि बीते एक अप्रैल को हमने पिछले पिछले 50 वर्षों में सर्वाधिक उपलब्धियों को लेकर अपने सहकर्मियों को बधाई दी और इस दौरान जब लोगों से इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के बारे में पूछा तो उनका कहना था कि जो शहर में बदलाव हो रहा है, उससे हम प्रेरित हुए हैं। इसलिए जब बाहर अच्छा काम हो रहा है तो उसका भी असर है कि प्लांट अच्छा कर रहा है। इसलिए मेरा मानना है कि शहर को छोड़ देंगे और प्लांट में बहुत अच्छा कर लेंगे, ऐसा नहीं हो सकता। हमें दोनों जगह काम करना ही होगा, तभी अच्छा होगा।

प्रगति तभी आएगी, जब काम बढ़ेगा

उन्होंने कहा- हम तो चाहेंगे कि अगल-बगल में और इंडस्ट्री भी आए, बियाडा की उन्नति हो, बियाडा में अच्छे लोग आयें, बियाडा आगे बढ़े। किसी भी क्षेत्र में प्रगति तभी आएगी, जब काम बढ़ेगा। आज ज्यादा काम करोगे तो जरूरी नहीं है कि बोकारो स्टील प्लांट कितनी नौकरियां देगा। स्टील प्लांट में एक नौकरी लगती है तो इकोनॉमी में 7 नौकरियां जेनरेट होती हैं, सात तरह के काम जेनरेट होते हैं। जैसे-जैसे यह बढ़ता जाएगा, नेचुरली चारों तरफ इंडस्ट्री आएगी, रोजगार आएगा, इकॉनोमिक डेवलपमेंट आएगा। हम दिल से मानते हैं कि यह है और होगा। इसे कोई रोक नहीं सकता है। हम चाहें भी तो रोक नहीं सकते हैं कि खाली बोकारो डेवेलप हो जाएगा, बाकी डेवलप नहीं होगा, ऐसा नहीं होगा। ... और केवल बोकारो डेवलप होगा और बाकी डेवलप नहीं होगा, वह भी नहीं होगा। दोनों चीजें साथ-साथ संभव नहीं है, दोनों साथ-साथ होने हैं। इसलिए मेरा मानना है कि बोकारो का भविष्य जो है, अच्छा है। उन्नति करने की क्षमता इसमें है।

देश के नामी-गिरामी अस्पतालों में गिना जाएगा बीजीएच

श्री प्रकाश ने कहा- बोकारो निश्चय ही आगे बढ़ रहा है। यहां से अब जल्द ही हवाई सेवाएं भी शुरू हो जाएंगी। इस दिशा में बहुत आगे तक काम हो चुका है। बोकारो जनरल अस्पताल को हम देश के नामी-गिरामी अस्पतालों की श्रेणी में लाने जा रहे हैं। यहां धीरे-धीरे ऐसी मशीनें लग रही हैं, जो देश के कुछ खास अस्पतालों में ही उपलब्ध हैं। हम यहां अच्छे डॉक्टरों की बहाली करने जा रहे हैं। हम चाहते हैं कि आस-पास के इलाकों में बोकारो जनरल अस्पताल की पहचान सबसे बिल्कुल ही अलग हो। इसे हम मल्टीस्पेशलिटी तो नहीं कह सकते, लेकिन जरूरत के हिसाब से इसकी पहचान अलग बनेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

मीडिया का सहयोग सकारात्मक

श्री प्रकाश ने कहा- हमें यह बोलने में कोई झिझक नहीं है कि बोकारो के आगे बढ़ने में मीडिया का बहुत सहयोग रहा है। बहुत सकारात्मक सहयोग रहा है। लोगों में किसी संस्थान की छवि (इंप्रेशन) आप क्रिएट करते हैं। लोगों में जब तक हमारी अच्छी छवि की बात नहीं जाएगी, लोगों में जोश नहीं आएगा तो हम कुछ भी नहीं कर पाएंगे। चाहे वह कितना भी पैसा लगा लें, कुछ भी लगा लें। उसमें हम आप लोगों की दाद देते हैं कि आप लोगों ने बोकारो में बहुत ही बढ़िया, बहुत ही सकारात्मक माहौल तैयार किया हुआ है, जिसमें लोग पार्टिसिपेट (सहभागिता) करने को तैयार हैं। थोड़ा-बहत जो लोग विरोध करते हैं, वह भी दूर हो जाएगा, जब लोग सहभागिता निभाने को तैयार हो जाएंगे। मूवमेंट जनता का होना चाहिए, मूवमेंट केवल ऑफिशियल होने से नहीं होता है।

– संपादकीय –

अतीक के अतीत पर राजनीति

उत्तर प्रदेश की राजनीति में कभी रसूखदार रहकर अपराध की दुनिया के बेताज बादशाह बने अतीक अहमद और उसके भाई अशरफ की पुलिस हिरासत में प्रयागराज में जिस तरह हत्या हुई, उसने उत्तर प्रदेश पुलिस की कार्यशैली पर सवाल जरूर खड़े कर दिये हैं। लेकिन, इन दोनों की मौत पर जिस तरह की राजनीति आज हो रही है, उसने नेता-अपराधी गठजोड़ की पोल एक बार फिर खोल दी है। क्योंकि, हिंसा के बदले हिंसा की न तो हमारी परम्परा है और न ही रिवाज। हिंसा का जवाब कानूनी रास्ते से ही कड़े दण्ड के रूप में होना चाहिए। लेकिन, कुछ शूटरों की गोलियों की आवाज में न्याय देखना उचित नहीं माना जा सकता। हम सभी जानते हैं कि हमारे देश में लगभग सभी राजनीतिक दलों में अपराधियों और बाहुबलियों की पैठ है। उन्हें राजनीतिक संरक्षण मिलता रहा है। यही वजह है कि अतीक जैसे माफिया का उदय होता है और उसके एक इशारे पर सैकड़ों निर्दोष मां-बहनों की मांग की सिन्दूर पोछ दी जाती है, उनका सुहाग उजाड़ दिया जाता है। अतीक जैसे गुण्डों के खिलाफ सुनवाई करने से न्यायाधीश भी घबराते हैं। ऐसा ही अतीक अहमद के मामले में देखा गया है। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के आदेश के बावजूद वर्षों तक उसके खिलाफ चल रहे मामले की सुनवाई करने की हिम्मत जुटाने से कई न्यायाधीश डरते रहे। लेकिन, अतीक की मौत के बाद धीरे-धीरे इन रहस्यों के ऊपर से पर्दा उठता जा रहा है। आज बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार हों या पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, एआईएमआईएम के अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी हों या सपा नेता अखिलेश यादव सरीखे भाजपा-विरोधी कोई और नेता, सभी अतीक की मौत पर आंसू बहा रहे हैं। उसके अतीत पर ओछी राजनीति कर रहे हैं। ये सभी ऐसा सिर्फ इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि आने वाले चुनाव में इनकी नजरें एक वर्ग विशेष के वोट बैंक पर टिकी हैं। ये सभी उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पानी पी-पीकर कोस रहे हैं। जबकि, यह भी सच है कि हाल में हिन्दुओं के रामनवमी पर्व में बिहार, बंगाल, झारखंड सहित कई राज्यों में धार्मिक जुलूस या शोभा-यात्रा पर हमले हुए और दो संप्रदायों के बीच खूनी संघर्ष हुए। लेकिन, उत्तर प्रदेश में ऐसा कुछ भी नहीं हुआ या किसी ने ऐसा करने की हिम्मत नहीं जुटाई। साफ है कि जहां-जहां उपद्रवियों पर सरकारें मेहरबान थीं, वहीं दंगे और सामाजिक विद्वेष की घटनाएं सामने आईं। सवाल यह उठता है कि अतीक ने अपराध की दुनिया में अपना साम्राज्य कैसे स्थापित किया? जब वह अपने बाहुबल से लोगों की जमीन और मकानों पर कब्जा कर रहा था, तब हमारी पुलिस, हमारा कानून और ये राजनीति, जिसका वह भी सक्रिय सदस्य बन बैठा था, कर क्या रही थी? अतीक जैसे अपराधी को राजनीति में किसने प्रवेश दिया? उसके बाहुबल का, उसके डर का इस्तेमाल कर यह राजनीति क्यों वर्षों तक पल्लवित-पोषित होती रही? तब किसी को उसके द्वारा किए जा रहे अत्याचार क्यों दिखाई नहीं दिए? यह पुलिस, यह व्यवस्था तब सब कुछ देखकर भी क्यों अनजान बनी रही? स्पष्ट है कि इस देश में जब तक राजनीति का अपराधीकरण सख्ती से रोका नहीं जाता, तब तक इस तरह के अपराधी पनपते रहेंगे और किसी न किसी रास्ते विधानसभाओं, लोकसभा में जाते रहेंगे। इसके लिए देश के नागरिकों को निर्भीक होकर आगे आना होगा।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

'मन की बात': स्वच्छ भारत अभियान का संकल्पवाहक

डॉ. बिंदेश्वर पाठक
संस्थापक
सुलभ इंटरनेशनल सोशल सर्विस ऑर्गनाइजेशन

भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। इसका मतलब यह है कि भारत धन-धान्य से पूर्ण था, लेकिन शायद साफ-सफाई पर लोगों का ध्यान नहीं था। शहर हो या गांव, लोग साफ-सफाई पर ध्यान नहीं रखते थे। इस्तेमाल के बाद चीजों को जहां-तहां फेंक देते थे, जिससे चारों तरफ गंदगी-ही-गंदगी दिखाई पड़ती थी। इसके अलावा, लोग खुले में शौच करते थे, घरों में शौचालयों की व्यवस्था नहीं थी। महिलाओं को शौच के लिए जाने में अत्यधिक कठिनाई होती थी। उन्हें सूर्योदय के पहले या सूर्यास्त के बाद शौच के लिए जाना पड़ता था। अंधकार में शौच के लिए जाने के कारण कभी-कभी सांप एवं बिच्छू इत्यादि डस लेते थे। कभी-कभी महिलाओं एवं लड़कियों के साथ आपराधिक घटनाएं भी हो जाया करती थीं। लोग सड़क के दोनों किनारों पर या रेलवे ट्रैक के बगल में शौच के लिए जाते थे। कुछ गांवों में एवं शहरों के मध्य में लोग कमाऊ शौचालय का उपयोग करते थे। सफाई कर्मचारी उन कमाऊ शौचालयों को साफ करते थे। यद्यपि वे लोग बहुत ही अच्छा कार्य करते थे, क्योंकि वे उन कमाऊ शौचालयों की सफाई न करते तो हैजा, इत्यादि बीमारियां फैल सकती थीं और लोग मर सकते थे। लेकिन, मैला साफ करने वालों के साथ अमानवीय व्यवहार होता था और सुबह से शाम तक उन्हें अछूत जैसा अपमानसूचक शब्द सुनने को मिलता था।

1915 में महात्मा गांधी ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व करना प्रारंभ किया। भारत में चारों तरफ फैली गंदगी को देखकर गांधी जी ने 1919 में कहा कि उन्हें स्वच्छ भारत पहले चाहिए एवं आजादी बाद में। महात्मा गांधी ने आमलोगों से और खासकर आजादी में संलग्न वालंटियर्स को कहा कि वे लोग अधिक से अधिक ट्रेंच लैट्रिन का इस्तेमाल करें, जो गांधी स्वयं दक्षिण अफ्रीका में करते थे। गांधीजी ने यह भी कहा कि जब तक घरों में शौचालयों की व्यवस्था नहीं हो जाती है तब तक खुले रूप में शौच करने जाएं तो शौच को ऊपर से मिट्टी से ढक दें, ताकि मक्खियाँ शौच पर न बैठ सकें, अन्यथा वही मक्खियां भोजन पर बैठकर बीमारियां पैदा कर सकती हैं और खाने वाले बीमार पड़ सकते हैं। सफाई कर्मचारियों द्वारा मनुष्यमल के साफ करने के कार्य को एक नए शौचालय का आविष्कार कर बंद करा दिया जाए और छुआछूत की प्रथा को समाप्त कराकर मैला साफ करने में संलग्न लोगों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ दिया जाए एवं उनकी प्रतिष्ठा समाज के लोगों के बराबर हो। गांधी ने यहाँ तक कहा था, 'शायद मेरा पुनर्जन्म न हो, लेकिन अगर मेरा पुनर्जन्म होता है तो मैं एक वाल्मीकि परिवार में जन्म लेना चाहूंगा ताकि मैं उन्हें सिर पर मैला ढोने जैसी इस अमानवीय, अस्वस्थ एवं घृणित कार्य से मुक्ति दिला सकूं।'

नरेन्द्र मोदी जब भारत के प्रधानमंत्री बने तो लालकिले से 2014 के 15 अगस्त को झंडा फहराते हुए उन्होंने कहा कि स्वच्छ भारत अभियान चलाया जाए और कोई भी व्यक्ति शौच के लिए बाहर न जाए। इसके लिए एक राष्ट्रव्यापी अभियान चलाने का आह्वान किया। आधिकारिक तौर पर 2 अक्टूबर 2014 को शुरू किया गया, स्वच्छ भारत अभियान स्वतंत्र भारत के इतिहास में सबसे सफल सरकारी पहलों में से एक है। यदि आप सोच रहे हैं कि यह कैसे हुआ, तो इसका उत्तर सरल है। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि प्रधानमंत्री ने नागरिकों को अभियान का अविभाज्य और महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया। अभियान की शुरूआत के एक दिन बाद 3 अक्टूबर 2014 को प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' के पहले ही एपिसोड में इसके बारे में बात की। उन्होंने लोगों से उत्साह के साथ अभियान से जुड़ने का आह्वान किया।

उन्होंने कहा कि देवालय से पहले शौचालय का निर्माण होना चाहिए। भारत के चार लाख पचास हजार स्कूलों में एक वर्ष के अंदर शौचालय बन जाएं, ताकि स्कूलों में खासकर लड़कियों को शौच जाने में कोई दिक्कत न हो। इससे स्कूलों में लड़कियों की संख्या बढ़ेगी और एक वर्ष में सभी स्कूलों में शौचालय बन गए। उन्होंने यह भी कहा कि माता एवं बहनों को शौच के लिए बाहर जाना पड़ता है इससे उन्हें बड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता। अतः महात्मा गांधी जी के 150वीं जंयती के पूरे होने के दिन तक सभी घरों में शौचालय बन जाए एवं खुशी की बात यह है कि भारत के लगभग 11 करोड़ घरों में शौचालय बन गए एवं अब माताओं एवं बहनों को शौच के लिए बाहर नहीं जाना पड़ता है।

15 अगस्त, 2014 को माननीय प्रधानमंत्री श्री मोदीजी ने अपने हाथों झाड़ू उठाया एवं दिल्ली स्थित वाल्मीकि कॉलोनी में फैली हुई गंदगी को अपने झाड़ू से साफ किया और देश के लोगों को आह्वान किया कि वे लोग भी अपने-अपने हाथों में झाड़ू उठाएं एवं जहाँ भी गंदगी दिखे उसकी सफाई करें। वाराणसी में गंगा किनारे स्थित अस्सी घाट की सफाई अपने हाथों से की, जहां पर 50 सालों से भी अधिक समय से मिट्टी जमा हुई थी। अस्सी घाट अब दर्शनीय हो गया है। स्थानीय लोगों द्वारा पूजा-अर्चना करने के अलावा देश-विदेश के पर्यटक अस्सी घाट आते हैं और गंगा की लहरों को देखकर आनंदित होते हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के प्रयास से स्वच्छता की एक लहर चल गई है और कोई भी आदमी अब घर हो या बाहर या सार्वजनिक जगह कहीं पर भी गंदगी नहीं करता। यदि कोई करता है तो लोग उसे मना करते हैं। आज गांव-गांव, शहर-शहर, स्कूल हो या कॉलेज, चलती हुई रेलगाड़ी एवं बसों में भी लोग यात्रा के दौरान स्वच्छता के क्षेत्र में माननीय प्रधानमंत्री द्वारा किए हुए एवं किए जा रहे स्वच्छता के आंदोलन की चर्चा करते हैं एवं प्रधानमंत्री द्वारा किए गए स्वच्छता के कार्य की सराहना करते हैं। पूरा देश अब साफ दिखने लगा है एवं इसका श्रेय नरेन्द्र मोदी जी को जाता है। प्रधानमंत्री यहीं नहीं रुके। उन्होंने 'मन की बात' जैसे महत्त्वपूर्ण मंच अभियान के प्रत्येक माइलस्टोन और देश भर से इस अभियान से जुडी छोटी-बड़ी कहानियों को साझा करते हैं। इससे नागरिकों में गर्व की भावना पैदा तो हुई है, साथ ही लोग देश को स्वच्छ करने और रखने के लिए प्रेरित हैं।

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने देश को स्वच्छ बनाने के लिए भारतीयों के बीच स्वच्छता का दीप जलाया है। उन्होंने स्वच्छता की उस संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए देशवासियों का आह्वान किया है, जो हड़प्पा-सभ्यता के समय यहाँ थी। आज जब 'मन की बात' रेडियो कार्यक्रम अपने 100वें एपिसोड की ओर बढ़ रहा है, तब देश प्रधानमंत्री के नेतृत्व में स्वच्छ भारत अभियान जैसे कई क्रांतिकारी जन आंदोलनों के लिए तैयार है। मेरी देशवासियों से गुजारिश है कि हम लोगों को अपनी पूरी शक्ति तथा साधन-द्वारा प्रधानमंत्री जी का साथ देना चाहिए। एतदर्थ आएं, हम सभी सभ्य, सुसंस्कृत और स्वच्छ हो कर भारत को सभ्य, सुसंस्कृत तथा स्वच्छ राष्ट्रों की कतार में अग्रणी बनाएं।

गर्मी प्रचंड

सुधीर कुमार झा, कोलकाता

कड़ी धूप, गर्मी प्रचंड,
पैंतालीस डिग्री तापमान।
सूरज अपने रौद्र रूप में,
आग उगलता आसमान।।

दिनभर कैद घरों में अपने,
जान बचाने को इन्सान।
खिड़की, दरवाजे, दीवार,
छूते ही लगते, अनल समान।।

खुद के पैर कुल्हाड़ी मार,
काट के पेड़ों को इंसान।
ढूंढ़ रहा है आज उन्हीं,
पेड़ों की छाया स्वर्ग समान।।

दूर बहुत और खंड-खंड,
बादल है बिखरा आसमान।
काश! एक हो, गरज-गरज कर,
बरसाए जल सुधा समान।।

इस्पात जगत में 5जी नेटवर्क स्थापित करने वाला पहला पीएसयू बनेगा सेल

पहल : बोकारो स्टील का टेलीकम्युनिकेशन्स कंसलटेंट्स इंडिया लिमिटेड के साथ हुआ एकरारनामा

संवाददाता

बोकारो : बोकारो स्टील प्लांट और इसकी अधीनस्थ इकाइयाँ झारखण्ड ग्रुप ऑफ माइंस, कोलियरी, सीसीएसओ, एसआरयू सहित गैर-संकार्य कार्य क्षेत्रों में 5जी/आईटी/दूरसंचार प्रौद्योगिकी और अन्य वायरलेस संचार तकनीकों के उपयोग हेतु शुक्रवार को सेल-बोकारो स्टील प्लांट और टेलीकम्युनिकेशंस कंसल्टेंट्स इंडिया लिमिटेड (टीसीआईएल) के बीच एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। बीएसएल की ओर से अधिशासी निदेशक (संकार्य) बी.के. तिवारी ने एमओयू पर हस्ताक्षर किए तथा साक्षी के रूप में सीजीएम (मेंटेनेंस) शरद गुप्ता ने हस्ताक्षर किए। टीसीआईएल की ओर से ईडी (आईटी और टेलीकॉम) अलका सेलोट अस्थाना ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए और गवाह के रूप में संजय कुमार, जीएम (डिजिटल परिवर्तन) ने हस्ताक्षर किए।

बीएसएल के अधिशासी निदेशक (संकार्य) बी के तिवारी ने इस मौके पर कहा कि समझौता ज्ञापन के परिणामस्वरूप सेल, टीसीआईएल की मदद से समर्पित 5जी नेटवर्क स्थापित करने की पहल करने वाला देश का पहला पीएसयू बन जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि यह समझौता ज्ञापन 5जी/आईटी/दूरसंचार प्रौद्योगिकियों का इस्पात निर्माण में संभावित अनुप्रयोगों तथा माइंस के विकास, स्मार्ट सिटी जैसे अन्य क्षेत्रों में नवीन समाधानों और नए अवसरों का मार्ग भी प्रशस्त करेगा. श्री तिवारी ने विश्वास जताया कि टीसीआईएल का इस क्षेत्र में समृद्ध अनुभव और विशेषज्ञता का लाभ बोकारो स्टील प्लांट को मिलेगा और दोनों संगठन इस साझेदारी से लाभान्वित होंगे। श्रीमती अस्थाना, ईडी (आईटी और टेलीकॉम) ने विस्तार से बताया कि टीसीआईएल के पास सेल-बीएसएल के लिए 5जी/आईटी/टेलीकॉम प्रौद्योगिकियों की तैनाती, परीक्षण, कमीशनिंग और रखरखाव के लिए टर्नकी समाधान प्रदान करने के लिए आवश्यक विशेषज्ञता, अनुभव और संसाधन हैं। उन्होंने ग्रीन डेटा सेंटर, रीयल-टाइम डेटा विश्लेषण, प्रक्रिया में सुधार आदि के लिए मजबूत और विश्वसनीय नेटवर्क के लिए अंतर्दृष्टि साझा की और कहा कि सेल-बीएसएल के लिए हमारे पारस्परिक रूप से सहमत आईटी और टेलीकॉम समाधानों को ऊर्जा की बचत, उत्पादकता वृद्धि, डाउनटाउन में कमी, लागत में कमी जैसे मापनीय आउटपुट के संदर्भ में परिणाम प्रदान करना चाहिए।

शरद गुप्ता, सीजीएम (मेंटेनेंस), सेल-बीएसएल ने कहा कि टीसीआईएल के साथ यह साझेदारी बीएसएल को डिजिटल परिवर्तन के अपने लक्ष्य की दिशा में सफल होने में उपयोगी साबित होगी. बिपिन कृष्णा सरतापे (सीजीएम-सी, ए एंड कम्युनिकेशन), ए बंकिरा (सीजीएम-सीएंडआईटी) ने भी इस अवसर पर अपने विचार साझा किए।

सेल-बीएसएल की ओर से निधि (वरिष्ठ प्रबंधक, सी एंड ए विभाग) ने कार्यक्रम का संचालन किया और वाई एस एन रेड्डी (वरिष्ठ प्रबंधक, इलेक्ट्रॉनिक्स और टेलीकॉम) ने एमओयू की पूरी प्रक्रिया के दौरान सेल-बीएसएल और टीसीआईएल की टीमों का समन्वय किया। विजय कुमार जीएम (सी एंड ए) ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

इस अवसर पर एस गंगोपाध्याय, जीएम (ईएल एंड टीसी), एन के बेहरा जीएम (ईडी वर्क्स ऑफिस), ए.के. बरनवाल, जीएम (सी एंड ए), राजेश कुमार, डीजीएम (सी एंड ए), अनुश्री, डीजीएम (सी एंड ए), श्री आर.एल. खेर, डीजीएम (सी एंड ए), आनंद राज, सीनियर मैनेजर (ईडी वर्क्स ऑफिस) और मनीष सिंह, सीनियर मैनेजर (ईडी वर्क्स ऑफिस) भी उपस्थित थे।

गुड न्यूज डालमिया सीमेंट द्वारा बनाई गई बालीडीह-पकरियाटांड़ सड़क का हुआ शुभारंभ

15 किमी दूरी अब बस 6 किमी में

संवाददाता

बोकारो : डालमिया सीमेंट (भारत) लिमिटेड द्वारा निर्मित पकरियाटांड पथ का उद्घाटन शनिवार को किया गया। इस 800 मीटर पथ का शुभारंभ चास के प्रखंड विकास पदाधिकारी मिथिलेश कुमार चौधरी एवं डालमिया सीमेंट भारत लिमिटेड, बोकारो इकाई प्रमुख प्रिय रंजन ने नारियल फोड़कर एवं ग्रामीणों को कलश प्रदान कर संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए बीडीओ श्री चौधरी ने पकरियाटांड़ के ग्रामीणों को बधाई देते हुए डालमिया सीमेंट भारत लिमिटेड के प्रयासों की सराहना की। मौके पर उपस्थित डालमिया सीमेंट बोकारो इकाई प्रमुख प्रिय रंजन ने ग्रामीणों का स्वागत करते हुए अपने संबोधन में कहा कि जिस प्रकार प्लांट लगाने एवं आगे बढ़ाने में हमें ग्रामीण सहयोग करते हैं, उसी प्रकार डालमिया सीमेंट भी ग्रामीणों की समस्याओं के समाधान को लेकर तत्पर है। इस सड़क का निर्माण इसी कड़ी में किया गया एक प्रयास है। मालूम हो कि कच्ची सड़क होने के कारण पकरियाटांड गांव से बालीडीह जाने के लिए ग्रामीणों को लगभग 15 किलोमीटर की लम्बी दूरी तय करनी पड़ती थी, परन्तु अब इस नई सड़क के बन जाने के फलस्वरूप यह दूरी मात्र 6 किलोमीटर हो गई है. ग्रामीणों ने संयंत्र के इस प्रयास का धन्यवाद करते हुए कहा कि कच्ची सड़क होने के कारण पहले वो अपने आपको बोकारो से अलग-थलग महसूस करते थे, परन्तु अब इस नई सड़क के बन जाने के बाद बोकारो जिले से उनका जुड़ाव और भी मजबूत हो गया है।

उद्घाटन कार्यक्रम में संतोष कुमार सिंह (वरिष्ठ महाप्रबंधक परियोजना) डालमिया सीमेंट बोकारो यूनिट, डॉ. बलराम पंडा, मानव संसाधन विभाग के मुख्य, सुभाष कुमार (महाप्रबंधक) इकाई तकनीकी प्रमुख परियोजना 1, सीएसआर प्रमुख उमेश प्रसाद, निशा हेमब्रम, सदस्य जिला परिषद, बासुकी देवी, मुखिया-माराफारी पंचायत, रजनी देवी-मुखिया, कनारी पंचायत, लीलावती देवी, मुखिया खुंटरी पंचायत, रेखा देवी, पंचायत समिति सदस्या, कनारी पंचायत, बालेश्वर सिंह, मुखिया, गोडाबाली उतरी, गणेश ठाकुर, मुखिया पंचायत-गोडाबाली दक्षिणी, राजू महतो, उपमुखिया, कनारी पंचायत, शिव चरण मांझी सहित पकरियाटांड के ग्रामीण एवं संयंत्र के विभागीय प्रमुख उपस्थित थे।

फिर बढ़ी कोरोना के संक्रमण की रफ्तार

एक ही दिन में 5 पॉजिटिव मिलने से हड़कंप

संवाददाता

बोकारो : बोकारो जिले में एक बार फिर कोरोना संक्रमण की रफ्तार बढ़ती दिख रही है। बीते हफ्ते एक ही दिन में कोरोना के पांच संक्रमित मरीज पाए जाने से हड़कंप मच गया। 331 लोगों के सैंपल जांच के लिए भेजे गए थे, जिनकी रिपोर्ट में पांच संक्रमित मरीज मिले। सभी मरीजों को होम आइसोलेशन में रखा गया है। जबकि, पूर्व में पाए गए दो कोरोना के मरीजों को ठीक होने के बाद उन्हें होम आइसोलेशन से मुक्त कर दिया गया है। इधर,

मरीजों की संख्या को देखते हुए नोडल पदाधिकारी डॉ. एनपी सिंह ने कोविड 19 के नियम का पालन सख्ती से करते हुए भीड़भाड़ से दूर रहने और सोशल डिस्टेंसिंग का सख्ती से पालन करने का निर्देश दिया है।

सैंपल जांच में लाएं तेजी : डीसी

जिले में बढ़ते कोरोना संक्रमण को लेकर उपायुक्त कुलदीप चौधरी ने सैंपल-जांच में तेजी लाने का निर्देश दिया। इस संबंध में उन्होंने नोडल पदाधिकारी से जानकारी ली। बताया गया कि जिले में वर्तमान समय में कोविड के सक्रिय मामले 07 हैं, सभी का उपचार हो रहा है, कोई भी मरीज गंभीर स्थिति में नहीं है। उपायुक्त ने चिन्हित स्थानों पर सैंपल टेस्टिंग करने की बात कही।

'मुझसे ही तू जिंदा है, न काटो मुझे बड़ा दुखता है...'

धरा बचाने को एकजुट हुई आवाज

संवाददाता

बोकारो : संपूर्ण जीव-जगत को अपनी गोद में शरण देने वाली धरती मां की रक्षा के आह्वान के साथ बोकारो में जगह-जगह पृथ्वी दिवस मनाया गया। लोगों ने एक स्वर में धरती मां की रक्षा करने का संकल्प लिया। डीपीएस बोकारो में छात्र-छात्राओं सहित विद्यालय परिवार के सभी सदस्यों ने पृथ्वी-रक्षा का संकल्प लिया। अर्थ डे की इस वर्ष की थीम 'इन्वेस्ट इन अवर प्लेनेट' यानी 'हमारे ग्रह में निवेश' पर आधारित आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के जरिए बच्चों ने वनों की रक्षा, पौधरोपण तथा पूरी धरा को बचाने का भावपूर्ण तरीके से सुंदर संदेश दिया।

प्राचार्य डॉ. ए. एस. गंगवार ने कहा कि पृथ्वी है, तो हम हैं। पृथ्वी को खतरे में डालना अपने अस्तित्व को संकट में डालने के समान है। विद्यालय के उप प्राचार्य अंजनी भूषण ने अधिकाधिक पौधे लगाने पर बल दिया। इस अवसर पर विद्यालय के सभी कर्मियों ने 12वीं की छात्रा शिक्षा सिंह द्वारा तैयार जागरुकतापरक बैज लगाकर दिनभर काम किया। विद्यालय की प्राइमरी इकाई और निर्धन बच्चों के शिक्षार्थ संचालित दीपांश शिक्षा केंद्र के बच्चों ने भी कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

मानवीय लिप्सा से धरती खतरे में : मुकुल

पृथ्वी दिवस के अवसर पर स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण संस्थान की ओर से पृथ्वी बचाओ कार्यक्रम आयोजित किया गया। संस्थान के महासचिव शशि भूषण ओझा मुकुल ने कहा कि बढ़ते प्रदूषण से धरती का ताप लगातार बढ़ रहा है। मानव की गलत सोच तथा लिप्सा ने जंगलों को काटकर, पर्वतों को तोड़कर, नदियों को अतिक्रमित एवं प्रदूषित कर, भूगर्भ जल का अत्यधिक दोहन एवं वर्षा जल का संचयन नहीं कर, ग्रीन गैसों का अत्यधिक उत्सर्जन कर धरती को प्रदूषण से व्याकुल बना दिया है। जो प्रकृति हमारी जीवन रक्षक है उसी को बर्बाद कर हमलोगों ने पृथ्वी माता को संकट में डाल दिया है। इस क्रम में उपस्थित सभी लोगों ने प्रदूषण पर रोक लगाकर धरती माता को बचाने का संकल्प लिया। मौके पर बबलू पांडेय, गौरी शंकर सिंह, मृणाल चौबे, मिथिलेश शर्मा, दयाराम परमार, वीरेंद्र चौबे, अजीत भगत, गंगा झा, मनोज पांडेय, शैलेंद्र तिवारी, उपेंद्र कुमार, विनोद, वीएन पोद्दार, अभय बरनवाल, संजीव कुमार, विनोद राय, बैद्यनाथ महथा, पवन राय, गोवर्धन चौधरी आदि मौजूद रहे।

तपिश में राहगीरों की प्यास बुझाने को आगे आया चास रोटरी

बोकारो : प्रचंड गर्मी की भारी तपिश के बीच राहगीरों की प्यास बुझाने की दिशा में रोटरी क्लब ऑफ चास ने अपने कदम आगे बढ़ाए हैं। अक्षय तृतीया के अवसर पर चास रोटरी द्वारा रोटरी भवन, चीराचास के समक्ष मुख्य पथ पर पनशाला का शुभारंभ रोटरी क्लब चास के अध्यक्ष नरेंद्र सिंह ने किया। नरेंद्र सिंह ने कहा कि राहगीरों की सुविधा को देखते हुए रोटरी क्लब द्वारा यह प्याऊ खोला गया है। चास रोटरी के संस्थापक अध्यक्ष संजय बैद ने कहा कि चीरा चास में बड़ी संख्या में ग्रामीण मजदूर कार्य पर आते हैं और उन्हें भीषण गर्मी में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से यह पनशाला चालू की गई है। चास रोटरी की सचिव पूजा बैद ने बताया कि राहगीरों को स्वच्छ पेयजल के साथ गुड़ और चना भी दिया जाएगा। इस अवसर पर पूर्व अध्यक्ष मनोज चौधरी, विनोद चोपड़ा, मनजीत सिंह एवं अक्षय कुमार आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

आक्रोश धार्मिक स्थलों में तोड़फोड़ और चोरी की घटनाओं का जल्द उद्भेदन करे प्रशासन : सांसद

बढ़ते अपराध पर चौतरफा रोष

संवाददाता

बोकारो : बोकारो में सरेबाजार गोलीबारी, मंदिरों में तोड़फोड़ और चोरी सहित अपराध की लगातार सामने आ रहीं वारदातों को लेकर शहरवासियों में दहशत के साथ आक्रोश भी है। चारों तरफ इसकी निंदा हो रही है तथा लोग पुलिस प्रशासन से इस पर सख्ती के साथ कार्रवाई करने की मांग कर रहे हैं। इसी कड़ी में धनबाद लोकसभा क्षेत्र के सांसद धनबाद पशुपतिनाथ सिंह के निर्देश पर एक प्रतिनिधिमंडल ने बोकारो के उपायुक्त कुलदीप चौधरी और बोकारो के आरक्षी अधीक्षक चंदन झा से मिलकर विगत दिनों बोकारो में धार्मिक स्थलों में हो रही घटनाओं से संबंधित उनका एक पत्र सौंपा। अपने पत्र में सांसद ने कहा कि विगत दिनों बोकारो के सेक्टर 04 सूर्य मंदिर, कसिया टांड़ मैदान, चंचली माता मंदिर माराफारी, ऋतुडीह शिव मंदिर में चोरी की लगातार घटनाएं हुई हैं। बोकारो जैसे शांतिपूर्ण शहर में इस तरह की लगातार हो रही घटना कई सवाल खड़े कर रही है। बोकारो जिला प्रशासन से इसे चुनौती के रूप में लेकर जल्द से जल्द सम्पूर्ण घटना को उजागर करने की अपेक्षा की जाती है।

सिटी सेंटर में गोलीबारी पर व्यवसायियों में आक्रोश

बोकारो चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज की कार्यकारिणी की बैठक सिटी सेंटर के होटल जिंजर में हुई। बैठक की अध्यक्षता उपाध्यक्ष नरेंद्र सिंह ने करते हुए कहा कि बोकारो के हृदय स्थल सिटी सेंटर में व्यापारी के प्रतिष्ठान पर गोली चलाकर अपराधियों ने सीधे कानून व्यवस्था को चुनौती देने का प्रयास किया है। इस घटना से शहर के व्यवसायियों में भय पैदा करने का प्रयास किया गया है। चेंबर के संरक्षक संजय बैद ने कहा कि बेहतर कानून व्यवस्था से ही उद्योग व्यापार का संचालन सुचारु रुप से किया जा सकता है। पुलिस जल्द से जल्द इस घटना का उद्भेदन कर व्यवसायियों का विश्वास यथावत रखें। मौके पर बिनय सिंह, जगमोहन सिंह जग्गी, महेश गुप्ता, प्रकाश कोठारी राजकुमार जायसवाल, सिद्धार्थ पारख, अमित जौहर, रविशंकर प्रसाद, राजेश पोद्दार, पुनीत जौहर आदि मौजूद रहे।

हफ्ते की हलचल

पूजन-हवन संग धूमधाम से मनाई गई निखिल जयंती

बोकारो : मंत्र, तंत्र व ज्योतिष को विश्वपटल पर पुनर्प्रतिष्ठापित करने वाले अंतर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार के प्रणेता परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी महाराज (डा. नारायण दत्त श्रीमाली) का जन्मोत्सव शुक्रवार को बोकारो, चास सहित आसपास के इलाके में सोल्लास मनाया गया। इस अवसर पर निखिल मंत्र विज्ञान, सिद्धाश्रम साधक परिवार की ओर से शहर के सेक्टर 12डी में स्थापित निखिल पारदेश्वर महादेव मंदिर में विशेष अनुष्ठान का आयोजन किया गया। उपस्थित साधक-साधिकाओं ने केक काटकर सदगुरुदेव निखिलेश्वरानंद जी महाराज का जन्मोत्सव धूमधाम के साथ मनाया। गुरु आरती, शिव आरती, समर्पण स्तुति एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। इस क्रम में आसपास का पूरा वातावरण निखिल भजन और जय गुरुदेव व हर-हर महादेव के गगनभेदी जयघोष से गुंजायमान बना रहा।

कलश-यात्रा के साथ श्री विष्णु महायज्ञ शुरू

बेरमो : बेरमो कोयलांचल क्षेत्र के संडे बाजार स्थित दुर्गा मंदिर परिसर में आयोजित नौ दिवसीय श्री विष्णु महायज्ञ एवं श्रीमद् भागवत महापुराण कथा शनिवार को कलशयात्रा के साथ शुरू हो गया। बेरमो स्टेशन के निकट दामोदर नदी में आचार्य श्री रुद्रकृष्ण शास्त्री के द्वारा विधि-विधान पूर्वक मंत्र उच्चारण करके जल पूजा कर कलश में जल भरा गया। कलश लेकर सैकड़ों महिला-पुरुष बच्चे गाजे-बाजे के साथ शामिल हुए। जलयात्रा में इस विष्णु महायज्ञ भागवत महापुराण कथा के कमेटी के अध्यक्ष देवतानंद दुबे, अलका मिश्रा, वीरेंद्र, रवि राष्ट्रीय तेली साहू महासंगठन के बोकारो जिला अध्यक्ष अनिल गुप्ता, संजय पांडे , गोपी, मोनू, महेश सोनी, भोला सिन्हा, कार्तिक सोनी, अजय सोनी आदि शामिल थे। यात्रा में मुख्य रूप से यजमान खाजू निषाद एवं उनकी धर्मपत्नी साथ साथ चल रहे थे। यज्ञ कमेटी के संयोजक चंदन सिंह ने कहा कि 29 अप्रैल को भंडारा एवं प्रतिमा विसर्जन के साथ यज्ञ संपन्न होगा।

चेतन की बांसुरी की धुनों पर मंत्रमुग्ध हुए लोग

बोकारो : विद्यार्थियों में शास्त्रीय संगीत की भावना जागृत करने के उद्देश्य से डीपीएस चास में को स्पिक मैके (सोसाइटी फॉर द प्रमोशन ऑफ इंडियन क्लासिकल म्यूजिक एंड कल्चर एमांगस्ट यूथ) संस्था की ओर से शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें अंतरराष्ट्रीय बांसुरी वादक चेतन जोशी, प्रसिद्ध तबला वादक विश्वजीत पॉल की संगत ने सभी का मन मोह लिया। इस दौरान बांसुरी की हर सुरीली तान और तबले की थाप पर विद्यार्थियों की तालियां बज रही थीं। कार्यक्रम का उद्घाटन स्कूल की कार्यवाहक प्राचार्या दीपाली भुस्कुटे व विशिष्ट अतिथि डॉ. समीर चंद्र सेठ ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इसके बाद कार्यवाहक प्राचार्या दीपाली भुस्कुटे ने बांसुरी वादक चेतन जोशी, उनके शिष्य सुमित चंद्र सेठ, तबला वादक विश्वजीत पॉल को सम्मानित किया। चीफ मेंटर डॉ. हेमलता एस. मोहन ने कहा कि शास्त्रीय संगीत हमारी सांस्कृतिक विरासत है, इसे स्पिक मैके संस्था नई पीढ़ी तक पहुंचाने का काम कर रही है।

चास-बोकारो में अकीदत से मनाई गई ईद

बोकारो : बोकारो में ईद उल फितर का त्यौहार अकीदत के साथ मनाया गया। गई। जाति-धर्म, ऊंच-नीच का भेद और सारे गिले-शिकवे भुलाकर सबों ने एक-दूसरे को गले मिलकर ईद की मुबारकबाद दी। तमाम मस्जिदों में नमाजियों का सैलाब उमड़ पड़ा। पूरी अकीदत के साथ मस्जिदों और ईदगाहों में मुस्लिम धर्मावलंबियों ने ईद की नमाज अदा की। इसके बाद एक-दूसरे को गले लगाकर ईद की मुबारकबाद दी। चांद की दीदार और अलविदा जुम्मे की नमाज के बाद पहले से तय समय के अनुसार उकरीद, सिवनडीह, डुमरो, आजाद नगर, हैंसाबातू, मखदुमपुर, इस्लामपुर, मिल्लत नगर, सिजुआ, झोपरो, बालीडीह, भर्रा, अंसारी मुहल्ला, सुल्तान नगर, गौस नगर, चास, न्यू पिंड़रगोडिया, सोलागीडीह, करमागोड़ा, पिपराटांड़, महेशपुर, धनधरी, पंचौरा, रामडीह, वास्तेजी, आगरडीह, रजा नगर, मोहनडीह, जाला, घटियाली, सोनाबाद आदि मुस्लिम बहुल्य इलाकों में ईद की नमाज अदा की गई। छोटे-छोटे नन्हें रोजेदारों द्वारा नमाज की अदायगी खास व देखने लायक बनी रही।

शराबबंदी को ले सवालों के कटघरे में नीतीश सरकार

पूर्व उपमुख्यमंत्री सुशील मोदी ने लगाए भेदभाव के आरोप, कहा- गिरफ्तार किए गए लोग 'गुनहगार' नहीं

विशेष संवाददाता

पटना : शराबबंदी को लेकर राज्य की नीतीश सरकार एक बार फिर कटघरे में है। सूबे के पूर्व उपमुख्यमंत्री और राज्यसभा सदस्य सुशील कुमार मोदी ने शराबबंदी कानून के तहत अभी तक गिरफ्तार करीब 8.35 लाख लोगों पर से मुकदमे वापस लेने पर जोर देते हुए सरकार से कई सवाल पूछे हैं। सुशील मोदी ने कहा कि ये लाखों लोग हत्या, अपहरण, दुष्कर्म, बैंककलूट जैसे किसी गंभीर, संगीन अपराध में नहीं पकड़े गए हैं कि इन्हें माफी देकर सुधरने का मौका ही नहीं दिया गया। उन्होंने साफ लहजे में कहा कि केवल शराब पीने के कारण इतनी बड़ी संख्या में जो लोग बिहार में 'गुनहगार' हैं, वे दूसरे राज्यों में होते तो अपराधी के श्रेणी में नहीं आते।

मोदी ने कहा कि शराबबंदी कानून के तहत केवल ऐसे गरीबों को जेल में डाला जा रहा है, जो 2000 रुपये जुर्माना नहीं दे सकते। इस स्थिति में अमीर लोग आसानी से छूट जाते हैं। उन्होंने सवाल करते हुए कहा कि जब 6 साल के दौरान शराबबंदी कानून में तीन बार संशोधन किया जा सकता है, तो एक बार आम माफी क्यों नहीं दी जा सकती? उन्होंने कहा कि शराबबंदी से जुड़े 4.58 लाख मुकदमों का अभी तक निपटारा क्यों नहीं किया गया?

भाजपा नेता ने पूछा कि शराब पीने के कारण जो 6.06 लाख लोग गिरफ्तार हुए, उन्हें सजा क्यों नहीं हो पायी और जहरीली शराब पीने से मौत की 30 से ज्यादा घटनाएं हुईं, लेकिन एक भी शराब माफिया को सजा क्यों नहीं हुई? उन्होंने यह भी कहा कि शराबबंदी के बाद राज्य में भांग, अफीम, गांजा जैसे मादक पदार्थों का सेवन बढ़ गया है।

पूर्व उपमुख्यमंत्री और राज्यसभा सदस्य सुशील मोदी ने शराबबंदी के मामले में पकड़े गए लोगों को माफी देकर सुधरने का मौका देने की अपील की है।

नीतीश सरकार से पूछे गए ये 10 सवाल

पूर्व उपमुख्यमंत्री एवं राज्यसभा सदस्य सुशील कुमार मोदी ने शराबबंदी कानून के तहत अभी तक गिरफ्तार सभी 8.35 लाख लोगों पर से मुकदमे वापस लेने पर जोर देते हुए सरकार से कई सवाल पूछे, जो निम्नलिखित हैं-

- जब 6 साल के दौरान शराबबंदी कानून में तीन बार संशोधन किया जा सकता है, तो एक बार आम माफी क्यों नहीं दी जा सकती ?

- शराबबंदी से जुड़े 4.58 लाख मुकदमों का अभी तक निष्पादन क्यों नहीं हुआ?

- शराब पीने के कारण जो 6.06 लाख लोग गिरफ्तार हुए, उन्हें सजा क्यों नहीं हो पायी?

- शराब पीते पकड़े गए लोगों को गंभीर अपराधियों से अलग रखने के लिए डिटेंशन सेंटर क्यों नहीं बनाये गए?

- शराब से जुड़े मामलों के त्वरित निष्पादन के लिए विशेष अदालतों के भवन आज तक क्यों नहीं बने?

जहरीली शराब पीने से मौत की 30 से ज्यादा घटनाएं हुईं, लेकिन एक भी शराब माफिया को सजा क्यों नहीं हुई?

- शराबबंदी कानून के तहत अभी तक गिरफ्तार 8.35 लोगों में दलित, आदिवासी और पिछड़ा समुदाय के लोगों की संख्या कितनी है?

- पासी समाज के लाखों लोगों के पुनर्वास की योजना क्यों विफल हुई?
- नीरा उद्योग के प्रोत्साहन का वादा पूरा क्यों नहीं हुआ?

- शराबबंदी के बाद राज्य में भांग, अफीम, गांजा जैसे मादक पदार्थों का सेवन क्यों बढ़ा?

वीर कुंवर का अवदान अविस्मरणीय : सिंह

संवाददाता

बोकारो : वीर कुंवर सिंह विजयोत्सव समारोह समिति की ओर से नगर के सेक्टर- 4 स्थित प्रतिमास्थल के समीप वीर केसरी बाबू कुंवर सिंह की जयंती समारोहपूर्वक मनाई गई। इसकी अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष रास नारायण सिंह ने की तथा संचालन राजेश्वर सिंह ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में धनबाद लोकसभा क्षेत्र के सांसद पशुपतिनाथ सिंह थे। उन्होंने कहा कि देश की स्वतंत्रता आंदोलन में लाखों लोगों ने कुबार्नी दी। बाबू साहब (वीर कुंवर सिंह) ने इस समय में अंग्रेजों को चुनौती देना कोई सपने में भी नहीं सोच सकता था। उस समय में 80 वर्ष की उम्र में बाबू साहब ने अंग्रेजों को चुनौती दी। आज हम जैसे लोग सुरक्षित हैं तो बाबू कुंवर सिंह जैसे लोगों के कारण ही हैं। उन्होंने कहा कि आने वाली पीढ़ियों ने बाबू कुंवर सिंह, रानी लक्ष्मी बाई, मेदिनी राय, मंगल पांडेय जैसे लोगों से प्रेरित होकर अंग्रेजों के विरुद्ध आंदोलन करने का प्रेरणा लेकर देश की आजादी मिली। अगर हम बाबू कुंवर सिंह जैसे लोगों को भूलेंगे तो आने वाली पीढ़ियां साहस और बलिदान जैसे शब्दों को भी भूल जाएगी। बाबू कुंवर सिंह कल भी हमारे लिए प्रेरणा थे,आज भी हैं और कल भी रहेंगे।

इस अवसर पर बेरमो विधायक कुमार जयमंगल सिंह ने कहा कि बाबू कुंवर सिंह को आने वाली पीढ़ियां जानें, इसके लिए उनकी जीवनी को नई पीढ़ी जाने इसके लिए पाठ्यक्रमों के साथ लोक गीतों से भी लोग जानते हैं। धनबाद विधायक राज सिन्हा, बीएसएल के अधिशासी निदेशक यूपी सिंह, शत्रुघ्न सिंह, बुद्ध नारायण यादव ने भी संबोधित किया।

समारोह में समिति के द्वारा राजनीतिक, सामाजिक, खेल, पत्रकारिता, साहित्य, शिक्षा, उद्योग के क्षेत्र अग्रणी भूमिका निभाने वाले स्व. समरेश सिंह, स्व. वीरेंद्र सिंह, डॉ. जयदीप सरकार, डॉ. बाँके बिहारी सिंह, धर्मशिला त्रिवेदी, पल्लवी प्रसाद, विजय कुमार झा, नीरज कुमार, सागर कुमार, दीपक कुमार सिंह को सम्मानित किया गया। बालीबॉल प्रशिक्षक जयदीप सरकार ने अपने सम्मान को सेल, बीएसएल व बोकारो के नागरिकों को समर्पित किया है। मौके पर एम ए सिद्दीकी, अनिल सिंह, संत सिंह, रितुरानी सिंह, मृगेंद्र प्रताप सिंह, अभिषेक सिंह, सिदार्थ सिंह माना, अशोक कुमार वर्मा, नीरज कुमार, राम सुमेर सिंह, कमलेश राय, अवधेश यादव, द्वारिकानाथ सिंह, विनय किशोर, देवेंद्र कुमार सिंह, बिनोद, संतोष सिंह, नागेंद्र पुरी, विनय आनंद, मनीष कुमार पांडेय, सुनील सिंह, राकेश मधु, विद्यासागर सिंह आदि मौजूद थे।

सीतामढ़ी में अक्षय तृतीया पर हुई मां जानकी की पूजा-अर्चना

मिथिला डायरी

सीतामढ़ी : जिले में वैशाख शुक्ल तृतीया शनिवार को हिंदू मान्यता के अनुसार लोगों ने श्रद्धा के साथ अक्षय तृतीया मनाया। इस अवसर पर लोगों ने अहले सुबह स्नान-ध्यान के बाद मंदिरों में जलाभिषेक व दर्शन कर पूजा-अर्चना की। घरों में भी पूजा-अर्चना कर भोजन व अन्न-वस्त्र का दान किया। मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना के साथ ही भजन कीर्तन, जाप व हवन का सामूहिक आयोजन किया गया। लोग सुबह से ही नदी, तालाब व पवित्र नदी घाटों पर स्नान किया तथा सूर्य देव के साथ ही माता लक्ष्मी व विष्णु भगवान की पूजा कर सुख समृद्धि की कामना की। अक्षय तृतीया पर परंपरा के अनुसार सोने की वस्तु की खरीद की। ऐसी मान्यता है कि अक्षय तृतीया सर्वाधिक सर्व सिद्धि योग वाली तिथि होती है तथा इस दिन के कार्य का लाभांश कभी नष्ट नहीं होता है। पंडितों के अनुसार अक्षय तृतीया को लक्ष्मी-नारायण का पूजन व अक्षत से हवन अक्षय फलदायी है। इस दिन पितृ-तर्पण करना अक्षय फलदायी है। पितरों के तृप्त होने पर घर में सुख-शांति-समृद्धि व दिव्य संतानें आती हैं। इस दिन की महिमा मत्स्य, स्कंद, भविष्य, नारद पुराणों व महाभारत आदि ग्रंथों में भी है। इस दिन किये गये पुण्यकर्म अक्षय व अनंत फलदायी होते हैं। इसलिए इसे अक्षय तृतीया कहा जाता है, यह सर्व सौभाग्यप्रद है। यह युगादि तिथि यानी सतयुग व त्रेतायुग की प्रारम्भ तिथि है। इसी दिन श्रीविष्णु का नर-नारायण, हयग्रीव और परशुरामजी के रूप में अवतरण व महाभारत युद्ध का अंत हुआ था। जानकारों के अनुसार अक्षय तृतीया के दिन ही स्वर्ग से माता गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुई थीं। इसी दिन माता अन्नपूर्णा का भी अवतरण हुआ था।

मिथिलांचल से सीमांचल के बीच रेल सेवा होगी बहाल

दरभंगा : 89 वर्षों के बाद फारबिसगंज-दरभंगा और 15 साल बाद फारबिसगंज-सहरसा रेलखंड पर ट्रेनों का परिचालन शुरू होने जा रहा है। ज्ञात हो कि इस रूट पर लंबे समय से ट्रेनों के परिचालन का प्रस्ताव फंसा हुआ था। लेकिन, अब रेलवे बोर्ड द्वारा इस रेलखंड पर दो एक्सप्रेस ट्रेनों के परिचालन की स्वीकृति मिल गई हैं। रेलवे बोर्ड द्वारा जोगबनी से पटना के बीच एक जोड़ी एक्सप्रेस ट्रेन के परिचालन की मंजूरी मिल गई है। हालांकि, ट्रेन चलाने की तिथि अभी तय नहीं की गई हैं। रेलवे बोर्ड ने दानापुर-जोगबनी डेली एक्सप्रेस और जोगबनी-सहरसा डेली एक्सप्रेस ट्रेन को भाया ललितग्राम और फारबिसगंज होते हुए चलाये जाने की अनुमति दे दी है। रेलवे बोर्ड के संयुक्त निदेशक की ओर से ट्रेन चलाये जाने को लेकर पत्र भी जारी कर दिया गया है। उल्लेखनीय है कि जनवरी में सीआरएस द्वारा निरीक्षण के बावजूद इस रूट पर ट्रेन चलाने की घोषणा नहीं की गई थी, जिसे लेकर लोगों में रोष था। इसी को लेकर कुछ दिनों पहले ट्विटर पर ट्रेन परिचालन शुरू करने के लिए ट्रेंड चलाया गया, जिसमें करीब 22 हजार से अधिक लोगों ने ट्वीट के माध्यम से प्रधानमंत्री, रेलमंत्री, रेलवे बोर्ड के चेयरमैन समेत अन्य जन-प्रतिनिधियों से ट्रेन चलाए जाने का अनुरोध किया था। इसके बाद अब जाकर रेलवे बोर्ड ने ट्रेन चलाने की स्वीकृति दे दी है। ट्रेन परिचालन को लेकर समय-सारणी भी जारी हो गई है।

जीवन एक युद्ध- शौर्य भाव से प्राप्त करें सफलता

गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली

नामिषेको न संस्कारः सिंहस्य क्रियते वने
विक्रमर्जितसत्त्वस्य स्वयमेव मृगेन्द्रता

सिंह को जंगल का राजा नियुक्त करने के लिए ना तो कोई अभिषेक किया जाता है, ना कोई संस्कार। अपने गुण और पराक्रम से वह स्वयं ही जंगल के राजा के पद को प्राप्त कर लेता है। यह जीवन एक युद्ध है। बाधाएं और समस्याएं आपको निरंतर घेरती रहती हैं। उन बाधाओं पर विजय प्राप्त करने के लिए पराक्रम अति आवश्यक है। पराक्रमी व्यक्ति में प्रत्येक परिस्थिति में विजयी होने की तीव्र ललक होती है। पराक्रमि व्यक्ति साहसी होता है, शौर्य से ओत-प्रोत होता है और वह नासमझ नहीं होता।

वह परिस्थितियों का उचित रूप से आकलन कर उसके अनुरूप क्रिया करता है। आप इस बात को भलीभांति गांठ बांध लें, शरीर का बल पराक्रम हेतु आवश्यक है, परंतु अनिवार्य नहीं। बिना मानसिक रूप से सबल और दृढ़ हुए आपमें पराक्रम का उदय नहीं होगा।

क्या पराक्रम साहस से भिन्न है?

पहली बात, साहस सबमें है, लेकिन बचपन से हमें उसका उपयोग करने की स्वतंत्रता नहीं होती है। सारा समाज आपको कायर बनाने में ही लगा रहता है, जिससे आपके ऊपर अपना शासन स्थापित कर सके। सिर्फ गुरु ही आपको साहसी बनाना चाहते हैं। आप पर आपका शासन स्थापित करना चाहते हैं, जिसके बाद आपमें पराक्रम का भाव जगता है। पराक्रम का अर्थ है एक या एक से अधिक व्यक्तियों में प्रतिस्पर्धा होने पर अपने लिए विजय सुनिश्चित करना। इसमें चातुर्य, सूझ-बूझ और और शौर्य बल का विविध अनुपातों में समन्वय होता है। पराक्रम साधक के लिए अति आवश्यक तत्व है। साधना का मार्ग श्रमसाध्य और दुष्कर है। बिना पराक्रम के आप अपने भय पर कैसे विजय पाएंगे और अगर आपने अपने भय, आशंकाओं और प्रश्नों को मात नहीं दी तो सफल कैसे होंगे? जब आपने पराक्रम जागृत होता है, तब कतिपय व्याधियों का स्वतः अन्त हो जाता है। ये व्याधियां पीड़ा, निराशा, शरीर कंपन, लय-ताल विहीन श्वासोच्छवास है, जो मानसिक उपद्रव के लक्षण हैं।

बहुधा लोग पराक्रम, अनियंत्रित क्रोधजनित ऊर्जा को समझ लेते हैं, पर यह समझ गलत है। पराक्रमी का ध्यान लक्ष्य पर केंद्रित होता है और उसके मस्तिष्क में योजनाएं बन रही होती हैं, उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए। ऐसा नहीं है कि पराक्रमी आवेश में अपनी बात सिद्ध करने के लिए चलती ट्रेन के सामने खड़ा हो जाएगा- उसे बेवकूफी ही कहा जाएगा।

पराक्रम के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा भय है। भय हमेशा विपरीत परिस्थितियों या समस्याओं से लगता है। भय का खरा खरा मूल्यांकन करना आवश्यक है। समय एक प्रवाह है। जो क्षण बीत गया, वह कल लौट कर कदापि नहीं आएगा। इसलिए समस्याओं को चुनौती समझें और उन्हें सुलझाने का प्रयास करें, क्योंकि उनका हल उन्हीं में निहित है।

कैसे हों भय-मुक्त?

भय-मुक्त होने के लिए आवश्यक है कि आप अपने भय से अवगत हों। जब तक आप अपने भय के कारणों को जानेंगे नहीं, आप उनका निवारण कैसे करेंगे?

क्या है आपका भय?

शान्त मन से अपने जीवन की समस्त आशंकाओं एवं भय को लिखें। ऐसा करते समय आपको थोड़ा अजीब लगेगा, पर भय का आकलन अवश्य करें।

क्यों है आपको भय?

फिर जाने क्यों लगता है आपको भय? क्या कोई विगत अनुभव आपको डरा रहा है? आखिर क्यों अनुभव करते हैं आप निराशा?

निहित शौर्य को पहचानें

साहस मनुष्य का आंतरिक गुण है। आपको अपने अन्तर में स्थित शौर्य के तेज को पहचानने की आवश्यकता है।

ध्यान और साधना करें

साधना, ध्यान एवं मंत्र-जप आपके जीवन में संतुलन स्थापित करने के लिए आवश्यक है। शान्त मन से जब आप समस्याओं का आकलन करते हैं, तब आपके समक्ष कई संभावनाएं स्वतः खुल जाती हैं।

प्रकृति में मत्स्य न्याय का सिद्धांत आदिकाल से कार्य कर रहा है। बड़ी मछली छोटी मछली को निकल जाती है। यह जीवन का एक स्वीकृत तथ्य है कि प्रत्येक मनुष्य में वही व्यक्ति जीवित रह सका है, जिसने जीवन में संघर्ष किया है। जीवन संघर्षों का एक अविराम क्रम होता है तथा इसमें जो क्षण भर के लिए चूका, वह इस जीवन में पराजित हो जाता है। वह जीवन ही क्या, जिसकी प्राण शक्ति का हनन किया जा चुका हो, क्योंकि यह आवश्यक नहीं कि जीवित रहते हुए भी वह जीवित व्यक्तियों की श्रेणी में हो। केवल श्वास-प्रश्वास के चलते रहने को ही तो जीवन नहीं कहा जा सकता।

पराक्रम ही जीवन है। मुश्किलें सिर्फ बेहतरीन लोगों के हिस्से में आती हैं, क्योंकि वे लोग ही मुश्किलें बेहतरीन तरीके से सुलझा समझा पाते हैं।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

गुणों की खान है तुलसी, जानिए इसके चमत्कारी फायदे

भारतीय परंपरा में तुलसी को मां का रूप माना जाता है। हर शुभ काम में तुलसीदल का प्रयोग किया जाता है, हर भोग के लिए तुलसीदल डाले जाते हैं। तुलसी दल पूजा के साथ-साथ स्वास्थ्य के लिए भी बहुत उपयोगी है। तुलसी में विटामिन ए पाया जाता है जो शरीर में फ्री रेडिकल्स का प्रभाव कम करता है। इसके अतिरिक्त तुलसी के मैग्नीशियम, आयरन, कैल्शियम, पोटेशियम और विटामिन सी भी पाया जाता है। मैग्नीशियम से हार्ट में रक्त संचार बढ़ता है। आइए जानें तुलसी के अन्य गुणों को:-

बुखार में लाभप्रद : तुलसी के पत्तों को उबालकर काढ़ा बना कर पीने से बुखार कम होता है। मलेरिया और डेंगू बुखार में भी यह काढ़ा लाभ पहुंचाता हैं।

कोलेस्ट्रोल भी करता है कम : अगर आपका कोलेस्ट्राल ज्यादा है, तो प्रातः शाम 10 से 12 तुलसी की पत्तियों का सेवन कुछ दिनों तक लगातार करते रहने से कोलेस्ट्रॉल का स्तर कम हो जाता है।

खांसी जुकाम में भी मिलता है लाभ : अगर प्रातःकाल नियमित रूप से 4 से 5 तुलसी दलों का सेवन किया जाए तो आप स्वयं को खांसी-जुकाम से बचा सकते हैं। अगर खांसी-जुकाम की शुरूआत हो गई है तो तुलसी की चाय का सेवन करें।

श्वांस संबंधी समस्या में भी : तुलसी की पत्तियों का काढ़ा अदरक और शहद के साथ लेने से श्वांस संबंधी समस्या में लाभ मिलता है। अगर फ्लू हो गया हो तो आधे लिटर पानी में तुलसी की पत्तियां, 2 लौंग व चुटकी भर नमक डालकर काढ़ा बनाएं। जब पानी आधा रह जाए तो गुनगुना कर दिन में दो से तीन बार पिएं।

गले में खराश : गले में खराश होने पर आधे लीटर पानी में 2 बड़े चम्मच तुलसी के पत्तों को धीमी आंच पर पकाएं। अधिक देर तक न पकाएं। 5 से 4 मिनट तक पका कर गुनगुना पी लें। गरारे भी कर सकते हैं।

किडनी स्टोन में भी लाभप्रद : किडनी स्टोन के शुरुआती समय से ही 6 महीने तक तुलसी की पत्तियों का रस शहद के साथ लेते रहने से लाभ मिलता है।

अन्य लाभ भी : तुलसी की पत्तियों को धूप में सुखा कर पाउडर बनाएं। थोड़ा सा सरसों का तेल मिला कर पेस्ट बनाएं और पेस्ट से दांत साफ करें। इस पेस्ट से पायरिया या सांस की बदबू दूर होती है। शरीर से आने वाली दुर्गन्ध दूर करने के लिए एक माह तक 15 से 20 पत्तियां प्रातः खाकर पानी पी लें। समस्या से पूरी तरह निबटने के लिए एक माह से ज्यादा भी खानी पड़ सकती है। चेहरे पर काले दाग धब्बे दूर करने हेतु तुलसी की पत्ती के रस में नींबू का रस मिला कर चेहरे लगाने से उनसे छुटकारा मिलेगा और चेहरा सुंदर लगेगा। जोड़ों के दर्द में भी तुलसी की पत्तियों का काढ़ा लाभप्रद होता है। घर पर दो-तीन गमलों में तुलसी लगाएं, नियमित प्रातः जल दें और दीया जलाएं, ताकि तुलसी फलती फूलती रहे।

- प्रस्तुति : शशि

जानिए, गुरु चांडाल योग के मायने

ज्योतिषीय विश्लेषण

- बी. कृष्णा नारायण -

इस वर्ष की खगोलीय गणना और ज्यातिषीय आकलन के अनुसार 22 अप्रैल से गुरु का प्रवेश मेष राशि में होने पर उस का संपर्क राहु के साथ आने की स्थिति में खास किस्म का योग बनेगा। उसे गुरु चंडाल का नाम दिया गया है। यह यह युति 29 नवंबर तक रहेगी और पांच राशियों मेष, मिथुन, कन्या, धनु और मकर राशि को विशेष तौर पर प्रभावित करेगी। यह आकलन तथाकथित ज्योतिषियों के जरिए किया गया है और इसके जरिए उपाय बताकर व्यावसायिक दृष्टिकोण को हवा देने की पूरी कोशिश की गई है। इन तथाकथित ज्योतिषियों के अनुसार यह योग इन पांच राशियों के लोगों पर जहां नकारात्मक प्रभाव देने वाला होगा, वहीं इसके प्रभाव से व्यक्ति के पारिवारिक और सामाजिक जीवन में विसंगियां पैदा होंगी। सचेत करते हुए हिदायत तक दी गई है कि गुरु चांडाल योग का अगर समय पर उपाय न किया जाए, तो कुंडली में जितने भी शुभ योग होते हैं वे सब अप्रभावित हो जाते हैं। माना जाता है कि इस योग के होने से व्यक्ति का चरित्र भी कमजोर हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधी परेशानी भी आ सकती है। यह कितना सटीक हो सकता है और इसकी नकारात्मकता किस हद तक किसे प्रभावित करेगी इसका कोई ठोस तथ्य नहीं बताया गया है।

केवल दो ग्रहों के मिलने और साथ बने रहने का कारण बताया गया है। ज्योतिषियों द्वारा किया गया इसका विश्लेषण किसी भी सामान्य व्यक्ति को आशंकित कर सकता है और उसके दिमाग में कुंठा और नकारात्मक भाव के लिए जगह बना सकता है। ऐसे में सवाल उठता है कि इस दौरान जन्म लेने बच्चों को क्या होगा? क्या वे अकुशल, अप्रभावकारी, कमजारे सेहत वाले और समाज के लिए अनुपयोगी होंगे? इनके तार्किक जवाब ही किसी के पास हों। क्या है यह योग एवं देश दुनिया और व्यक्ति विशेष पर इस हद तक प्रभावित कर देगा, जिससे जीवन में अफरा-तफरी जैसी स्थिति आ जाएगी?

ज्योतिषीय तथ्यों के अनुसार गुरु और चांडाल दो शब्दों से मिलकर बना है गुरु चांडाल। यहां 'गुरु' से तात्पर्य बृहस्पति ग्रह से, जबकि चांडाल से तात्पर्य छद्म राहु से है। गुरु धर्म, न्याय, दर्शन, विस्तार, ऐश्वर्य एवं समृद्धि, रक्षात्मक का द्योतक है। राहु के कई नामों में से एक नाम चांडाल प्रयोग किया गया है। चांडाल का अभिप्राय निम्नकोटि के व्यक्ति, जो जन्म से या फिर क्रिया कलाप से होता है। अगर धार्मिक पुस्तकों में वर्णित मतंग ऋषि की बात करें तो वह जन्म से चांडाल हैं और राजा त्रिशंकु अपने क्रिया कलाप से इस प्रकृति के हैं। आगे इसको और विस्तार दने के लिए इस कहानी पर नजर देना जरूरी है।

एक बार बनारस में शंकराचार्य अपने शिष्यों के साथ गंगा नदी की ओर जा रहे थे। रास्ते में एक चांडाल ने उनका रास्ता चार कुत्तों के साथ रोक लिया। शंकराचार्य ने जब मार्ग से हटकर राह देने की बात की तब चांडाल ने पूछा,'किसको मार्ग से हटने कह रहे हो– देह को या देहि (आत्मा) को'? आचार्य समझ गए कि यह कोई निम्नकोटि का मनुष्य नहीं, बल्कि निश्चित तौर पर कोई अति प्रबुद्ध व्यक्ति है। उनका अहंकार मिश्रित भ्रम दूर हुआ। उन्हें जीवन दर्शन समझ में आया। धर्म समझ में आया। उन्होंने चांडाल को अपना गुरु स्वीकार किया। चांडाल ने अपने छद्म रूप से बाहर आकर आचार्य को अपना असली रूप दिखाया। भगवान शिव ही चांडाल का रूप धरकर आये थे।

इस कथा के संदर्भ में 'गुरु चांडाल योग' की बात की जाए तो पाएंगे कि राहु यदि गुरु के साथ शुभ भाव में शुभ प्रभाव में है तो यह योग ईश्वरीय आशीर्वाद से अहंकार को दूर कर जीवन दर्शन से उसी प्रकार साक्षात्कार कराने वाला एवं धर्म के मार्ग पर प्रवृत करने वाला होगा, जिस प्रकार शंकराचार्य को शिव ने करवाया था। राहु यदि गुरु के साथ होकर अशुभ ग्रहों के प्रभाव में है तो यह योग 'त्रिशंकु' की तरह अपने क्रिया कलापों से अपमानजनक स्थिति में पहुंचा देने वाला होगा। उदाहरण के लिए राहु, गुरु यदि पंचम भाव में अशुभ ग्रहों से दृष्ट या युत है, तो ऐसा व्यक्ति दिमागी रूप से इतना उलझा हुआ होगा कि सही या गलत के बीच के अंतर को समझने में असमर्थ हो जाएगा। चाहे कोई कितना भी बढ़िया काम कर ले ऐसा व्यक्ति उसकी प्रशंसा नहीं करेगा। उस व्यक्ति की ऐसी वृत्ति उसके लिए अपमानजनक स्थिति पैदा करने वाली होगी।

इसके विपरीत यदि यह योग शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट है तो शुभ परिणाम देने वाला होगा। जन्म कुंडली के पंचम भाव के साथ सप्तांश कुंडली का विवेचन किया जाना चाहिए। इससे यह पता चलेगा कि क्या पंचम भाव में बनने वाला यह योग अभी फलित होगा या संतान के माध्यम से इसका फल प्राप्त होगा। इसी प्रकार, हर भाव का सूक्ष्म विश्लेषण बड़ी ही स्पष्टता से हमारे सामने कुंडली में निहित गूढ़ार्थ को स्पष्ट करने वाला होग। प्रवृत्ति मार्ग से निवृत्ति मार्ग पर लेकर जाने वाला होगा।

देश, दुनिया में - जून, सितंबर, अक्टूबर माह का अंतिम सप्ताह और नवंबर माह का शुरुआती दो सप्ताह काफी संवेदनशील होगा। धार्मिक उन्माद का माहौल बन सकता है। प्राकृतिक आपदाओं की परिस्थितियों की भी आशंकाएं हैं। इस योग के निर्मित होने के समय सूर्य और चंद्र दोनों का उच्च का होना, गुरु का वर्गोत्तम होना और इस योग पर कुंभ राशि से शनि की दृष्टि होना- जन जागरण काल के शुभारंभ का संकेत हैं। सिर्फ भारतवर्ष ही नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व में तमाम नकारात्मकता के बीच इस शुभ बदलाव के लहर को महसूस किया जा सकेगा।

अब ध्यान देने की बात यह है कि 22 अप्रैल से 29 नवंबर के बीच सम्पूर्ण विश्व में जो बच्चे पैदा होंगे वे इस योग के साथ पैदा होंगे। प्रत्येक राशि के बच्चे इस योग के साथ पैदा होंगे। क्या उन सबका जीवन विनाशकारी होगा? ग्रहों की गोचरीय स्थिति ही यदि सब कुछ तय करने लगें तो फिर व्यक्ति के स्वयं की जन्म कुंडली की जरूरत क्यों? इस संदर्भ में हमारा ज्योतिष के तथ्यों से अनभिज्ञ रहकर भ्रमित होने से बचना जरूरी है। इसके बदले हुए रूप को समझते हुए हर पक्ष का सूक्ष्म विश्लेषण करने के बाद ही जीवन का मर्म समझा जा सकता है। यह नहीं भूलें कि ज्योतिष, जिसके नाम में ही 'ज्योति' जुड़ा हुआ है वह कभी भी एकांगी होकर बात नहीं करता है। कभी भी जीवन को अंधेरे में लेकर जानेवाले अज्ञान की बात नहीं करता है। यह तो हमें जीवन से अज्ञानरूपी तम को दूर कर ज्ञान के शुभ्र धवल प्रकाश में लाकर खड़ा कर देता है।

(लेखिका वरिष्ठ ज्योतिषविद हैं।)

एक निर्धन ब्राह्मण

हिन्दी कविता

मैं अर्थ-धन, भ-धन हीन सही,
पर हूं सदा से तप-बल धनी।
तप की अग्नि से तप-तप कर,
है काया मेरी सशक्त बनी।

किसी भू-स्वामी या धन-कुबेर की,
मैं करता नहीं चाटुकारिता।
मैं भक्त हूं शारदा भवानी का,
जो है सदा अपराजिता।

जरा याद करो उस सिकन्दर को,
था अभिमान जिसे निज भुजबल का।
तपसी दांड्यायन था धनी,
स्वाभिमान और निज तप बल का।

मैं निर्धन, तपसी एक ब्राह्मण हूं,
रहता हूं छोटी एक खोली में।
धन-बलियों दर्प दिखाना मत,
रख ले सकता हूं जग को झोली में।

था सहस्त्रार्जुन को भ्रम हो आया,
सब हासिल करने का निज भुजबल से।
इस भ्रम में उसने जो कर डाला,
हुआ सामना तपसी के तप बल से।

ओ भुज-बल, धन-बल के स्वामी जन,
न करना अपमान किसी नागार्जुन का।
वरना होगा तेरा भी हाल वही,
मिट जाओगे बस सहस्त्रार्जुन सा।

– बिनोदानन्द झा 'विश्वबंधु' –

गुदगुदी

एक बन्दा इलेक्शन में किस्मत आजमा रहा था, उसे सिर्फ तीन वोट मिले, उसने सरकार से जेड प्लस सुरक्षा की मांग की...
जिले के डीएम ने कहा- आप को सिर्फ 3 वोट मिले हैं आप को जेड प्लस कैसे दे सकते हैं?
आदमी बोला - जिस शहर में इतने लोग मेरे खिलाफ हों तो मुझे सुरक्षा मिलनी ही चाहिए!!!'

संता - अगर तुम्हें गर्मी लगती है तो क्या करते हो?
बंता - मैं कूलर के पास जाकर बैठ जाता हूं।
संता- अगर फिर भी गर्मी लगती है तो क्या करते हो?
बंता - तो फिर मैं कूलर चालू कर लेता हूं!

सुबह-सुबह पत्नी नींद से उठते ही बोली, 'अजी सुनते हो?'
पति- बोलो! क्या हुआ?'
पत्नी- मुझे सपना आया कि आप मेरे लिए हीरों का हार लेकर आए हो।
पति- ठीक है, तो वापिस सो जाओ और पहन लो।

चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल
जंगल में है मोर नाचता
इसका सबको कहाँ है पता
अवलोको, जब जंगल जाओ
रोज नई-सी दुनियाँ पाओ
हरक्षण सब कुछ बदल रहा है
परिवर्तन ही है जीवन का सार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल

चल जंगल चल, चल जंगल
जंगल जाड़े में ठिठुरा है
वस्त्रहीन-सा हुआ खड़ा है
झर-झर के पत्ते गिरते हैं
तिरकर गिर धरती भरते हैं
जाड़े में जंगल गाता है
वीतराग के गीत, बना प्रतिहार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल

(क्रमशः)

कुमार मनीष अरविन्द

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा दामिनी प्रिन्टर्स, जेब्री.- 12, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बोकारो से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई.पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)

जलवायु परिवर्तन के खिलाफ साझा जंग

पहल... जो बाइडेन की अध्यक्षता में 20 देशों ने मिलकर बनाई रणनीति

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : जलवायु परिवर्तन (क्लाइमेट चेंज) के खिलाफ पूरी दुनिया बहुत जल्द अब साझा कार्रवाई करने को लेकर अपने कदम आगे बढ़ा चुकी है। 20 देश मिलकर इसके खिलाफ अब साझा लड़ाई करेंगे। इसे लेकर रणनीति बनाई गई है। अमेरिका द्वारा ऊर्जा एवं जलवायु परिवर्तन पर मेजर इकोनॉमीज फोरम (एमईएफ) के नेताओं की एक वर्चुअल बैठक अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन की अध्यक्षता में हुई। इसमें दुनियाभर के राष्ट्राध्यक्षों एवं मंत्रियों ने हिस्सा लिया। यह समूह दुनिया की 20 बड़ी अर्थव्यवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, मिस्र, यूरोपीय आयोग, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, दक्षिण कोरिया, मैक्सिको, सऊदी अरब, तुर्किए, संयुक्त अरब अमीरात और ब्रिटेन शामिल हैं।

इस बैठक का विषय अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के कार्यकारी निदेशक डॉ. फतह बिरोल द्वारा निर्धारित किया गया था। उन्होंने वैश्विक तापमान में हो रही बढ़ोतरी को सीमित करने के लिए जलवायु परिवर्तन के खिलाफ कदम उठाने पर जोर दिया। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एलआईएफई यानी पर्यावरण के लिए जीवन शैली के वैश्विक आह्वान का उल्लेख किया। साथ ही इसकी प्रासंगिकता पर भी प्रकाश डाला।

एमईएफ के नेताओं ने क्लाइमेट चेंज को माना सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक, करेंगे संयुक्त कार्रवाई

एमईएफ के सभी नेताओं ने जलवायु परिवर्तन को सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक बताया और इससे निपटने के लिए संयुक्त कार्रवाई को बढ़ाने की जरूरत पर जोर दिया। सभी नेताओं ने मंच को उनके देशों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग जलवायु कार्रवाई की दिशा में उठाए जा रहे कदमों की जानकारी दी। केन्द्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन और श्रम एंव रोजगार मंत्री भूपेंद्र यादव ने इस बात पर जोर दिया कि कैसे भारत वैश्विक औसत के करीब एक-तिहाई प्रति व्यक्ति उत्सर्जन के साथ जलवायु परिवर्तन से निपटने के प्रयासों में सबसे आगे खड़ा है।

उन्होंने ऊर्जा, परिवहन, शिपिंग, हाइड्रोफ्लोरोकार्बन जैसे क्षेत्रों से ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के लिए भारत की पहलों और कॉर्बन को नियंत्रित करने वाले उपयोग एवं भंडारण पर प्रकाश डाला। जलवायु पूंजी के महत्व को स्वीकार करते हुए उन्होंने गरीबी घटाने और एसडीजी पर ध्यान केंद्रित करने जैसी वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए बैलेंस शीट ऑप्टमाइजेशन यानी अनुकूलन और अतिरिक्त पूंजी प्रवाह के माध्यम से एमडीबी की वित्तीय क्षमता को मजबूत करने के प्रस्तावित प्रयासों का भी समर्थन किया।

अपने भाषण के अंत में केंद्रीय मंत्री ने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए व्यक्तिगत व्यवहार परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करते हुए एलआईएफई यानी पर्यावरण के लिए जीवनशैली के महत्व को दोहराया।